स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग 1

द्वितीय सेमेस्टर 8 ... 20

WEDNESDAY JULY 30

जो सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥1॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल हरण ॥2॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन ॥3॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥4॥

गुरु वंदना

बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥5॥
बँदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किए तिलक गुन गन बस करनी।
श्री गुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू॥

उधरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के॥
रामचरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक॥
जथा सुअंजन आँजि दृग, साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैल बन, भूतल भूरि निधान ॥१॥

विद्यार्थियों यहाँ से गोस्वामी जी अवधी में मंगलाचरण पेश करते हैं। यह अवधी श्रीराम की जन्म भूमि अवध के आस-पास बोली जाने वाली भाषा है इसीलिए कवि ने इसी भाषा को प्रधानता में अपनाया है। ऐसे यह भी बताते चलें कि अगर चाहते तो तुलसी दास संस्कृत में भी इसकी रचना कर सकते थे, ब्रजभाषा में भी इसकी रचना कर सकते थे परंतु उन्होंने राम भक्ति का परिचय देते हुए अवधी को ही अपनी काव्य भाषा बनाया। यहाँ से कवि पुनः आदि पूजित गणेश की वन्दना करते हैं। वे कहते हैं कि जिनका स्मरण करने से सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जो गज मुख वाले हैं वे मुझ पर कृपा करें क्योंकि वे बुद्धि के राशि स्वरूप और गुणों के धाम हैं वे मुझ पर कृपा करें। दूसरे सोरठा में प्रभु के महात्म्य की चर्चा

FRIDAY AUGUST 01 2

14 SEP

कहते हैं और कहते हैं कि जिनके नाम स्मरण से गूँगा भी वाचाल हो जाता है, लंगड़ा भी पहाड़ लाँघ जाता है। वे बताते हैं जैसे प्रभु मुझ पर दया करें पापों से मुक्ति दिलाते हैं। वो कोई और नहीं हैं नीलकमल के समान नीलाभ शरीर वाले हैं, लालकमल के समान आँखों वाले हैं जो सदा क्षीरसागर में शयन करते हैं वे नारायण मेरे हृदय में निवास करें। पुनः गोस्वामी जी श्वेत सफेद चन्द्रमा के समान देह वाले हैं, जिनकी प्रियतमा पार्वती जी हैं जिन्होंने कामदेव का मर्दन किया था वो शिवशंकर भोलेनाथ मुझ पर कृपा करें। अगली पंक्ति में अपने गुरु के चरणों जो नर के रूप में स्वयं हरि के, जिनके वचनों से महामोह रूपी अज्ञानांधकार को सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित करने वाला को।

चौपाई

यहाँ पुनः गुरु की वंदना की गयी है, उनके चरणकमल की वन्दना की गयी है। वे कहते हैं उनका संग सुरुचिकर था। वे गुरु संजीवनी चूर्ण के समान नवजीवन देने वाले हैं, उनकी कृपा से सम्पूर्ण सांसारिक कष्टों का नाश हो जाता है।

4

गुरू की महिमा को बखान करते हुए कि श्री गुरू के चरण रज, गुरू के महत्व की सुकृति शिव की विभूति के समान है, वह सुन्दर और कल्याणकारी है, आनन्द की जननी है। उस चरणरज को तिलक करने से गुणों का समूह वश में हो जाता है। वे कहते हैं कि श्री गुरू महाराज के चरण की ज्योति मणि की ज्योति के समान प्रकाशवान है। वे कहते हैं कि गुरू के स्मरण मात्र हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है, अज्ञानांधकार नष्ट हो जाता है जिनके हृदय में गुरू भक्ति आ जाता है वे बड़े भाग्यशाली हैं, जैसे ही उनकी स्मृति हो जाती है निर्मल नेत्र खुल जाते हैं, संसार रूपी रात्रि के

दोष दुख मिट जाते हैं और रामचरित्र रूपी मणि और माणिक्य प्रकट या अप्रकट जिस खानि में हैं दिखाई देने लगते हैं। = दोहा =

तुलसीदास जी कहते हैं गुरू कृपा रूपी सुअंजन ऐसे प्रभावकारी है कि पर्वतो, वनों, और ...

कहीं भी हों सभी दृश्यमान हो जाते हैं।
इस प्रकार हम देखते हैं कि इन सारी पंक्तियों में
गुरु की महिमा, महत्व और प्रभाव को दर्शाने का
प्रयास किया गया है। आगे की पंक्तियों में भी
गुरु के महत्व की चर्चा की गयी है।

= इति शुभम = जय श्रीराम =

कुमार रजनीकान्त रंजन
2/8/2024